Total Pages : 8

1641/R

I Year Arts Examination, 2016

SANSKRIT

Paper–I

(काव्य, नाटक एवं प्रायोगिक व्याकरण)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).
All questions carry equal marks.
सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).
Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.
प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।
प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).
All questions carry equal marks.
कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।
सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिये :

इकाई-I

(i) विद्वानों की सभा में मौन किसका आभूषण है?

(ii) मनुष्य का सर्वोत्तम आभूषण क्या है?

इकाई-II

(iii) दुष्टों के स्वभाव सिद्ध दुर्गुण कौनसे हैं?

(iv) ''छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम्'' पंक्ति की व्याख्या कीजिए।

इकाई-III

(v) उदयन का विश्वासपात्र मन्त्री कौन था?

(vi) 'स्वप्नवासवदत्तम्' के विदूषक का क्या नाम है?

इकाई-IV

(vii) 'स्वप्नवासवदत्तम्' में स्वप्न की घटना किस अंक में है?

(viii) वसुन्धरा कौन थी?

इकाई-V

(ix) 'अभिगम्य' में प्रकृति-प्रत्यय बताइये।

(x) 'यथानिश्चितम्' में समास विग्रह कीजिये।

खण्ड-ब

इकाई-I

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।

ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।।

अथवा

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

इकाई-II

3. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाभिरुचिः व्यसनं श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।

अथवा

पापान्निवारयति योजयते हिताय, गुह्यं निगूहति गुणान् प्रकटीकरोति।

आपद्गतं च न जहाति ददातिकाले, सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः।।

इकाई-III

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखं प्राणाः सुखं तपः।

सुखमन्यद् भवेद् सर्वं दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।।

अथवा

दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः, स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह वाष्पं, प्राप्तानृण्यायाति बुद्धिः प्रसादम्।।

इकाई-IV

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

रूपश्रिया समुदितां गुणश्च युक्तां,

लब्धवा प्रियां मम तु मन्द इवाद्य शोकः।

पूर्वाभिघातसरुजोऽप्यनुभूत दुःखः,

पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि।।

अथवा

कःकं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले, रज्जुच्छेदे के घटं धारयन्ति।

एवं लोकस्तुल्यधर्मो बनानां, काले-काले छिद्यते रुह्यते च।।

इकाई-V

6. प्रश्न संख्या 2 (दो) में किसी एक श्लोक में प्रयुक्त पदों के आधार पर सन्धि, समास, प्रकृति-प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिये।

अथवा

प्रश्न संख्या 4 (चार) में किसी एक श्लोक में प्रयुक्त पदों के आधार पर सन्धि, समास एवं प्रकृति-प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिये।

खण्ड-स

इकाई-I

7. नीतिशतक के आधार पर धैयशाली व्यक्तियों के गुणों पर एक लेख लिखिये।

इकाई-II

8. नीतिशतक के आधार पर 'मानशौर्य पद्धति' का वर्णन कीजिए।

इकाई-III

9. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के आधार पर 'उदयन' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

इकाई-IV

10. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के पंचम अंक की कथा का सार अपने शब्दों में शीर्षक की सार्थकता प्रतिपादित करते हुए कीजिए।

इकाई-V

11. प्रश्न संख्या 5 (पाँच) के श्लोकों में प्रयुक्त पदों के आधार पर सन्धि, समास एवं प्रकृति-प्रत्यय विषयक व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखिये।